

“क्रोध विजय”

“चत्वारि परमंगाणि दुल्लहाणि इह जंतुणो,
माणुसत्तं सुइ सध्धा संजमम्मि य वीरियं”

पूज्यश्रीजी ने अपनी मधुर वाणी से ‘उत्तराध्ययन सूत्र’ के इस श्लोक द्वारा अपने प्रवचन में यह फरमाया है कि, मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि, जो वस्तु दुर्लभ और कीमती होती है, वह वस्तु उसे ज्यादा प्रिय होती है। चाहे वो वस्तु काम की हो या नहीं हो, यह देखे बिना, परखे बिना ही बस, उसे पाने के लिये अथाक प्रयत्न करता है।

प्रयत्न के बाद यदि वो वस्तु उसके पास आ भी जाये तो मन उत्साह से भर जाता है। और साथ में Power भी बढ़ जाता है।

गाथार्थ : इस संसार में जीव के लिए ४ मुख्य वस्तुएँ बहुत ही दुर्लभ बताई गई हैं।

(१) मनुष्य भव (२) श्रुति याने शास्त्रश्रवण (३) धर्म में श्रद्धा और (४) संयम पालने के लिये वीर्य, यानि अपने आप पर काबू पाना। ‘आत्मबल’।

6

Meaning in English : Four great things are very rare in this world for a living being :

- (1) Birth as a human being,
- (2) Listening to Scriptures,
- (3) Faith in religion and
- (4) Energy to practise self-control.

अर्थशास्त्र (Economics) का एक सिद्धांत है कि, जो वस्तु दुर्लभ होती है, उसकी कीमत उतनी ही ज्यादा होती है। उदा. के तौर पर ‘सोना’ (Gold) को लिजीये। जिसकी कीमत आसमान को छु रही है। क्योंकि सोना जहां से प्राप्त होता है वहां से उसकी प्राप्ति (Supply) कम हो रही है। और मांग दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। साथ ही में कीमत भी बढ़ती जा रही है।

उसी तरह असंख्य देव भी मनुष्य-भव पाने के लिये या मानव बनने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं, परंतु कोई एकाध देव को ही मानव-भव

7

मिल पाता है। क्योंकि मनुष्यों की संख्या (Seat) सीमित है। जिस वजह से किसी एकाध जीव को ही मानव-भव की प्राप्ति होती है।

शास्त्र में बताया है कि, गर्भस्थ मनुष्य की संख्या कोई भी समय संख्याती (limited) ही होती है। उसे दुर्लभ मानव-भव को हम कषायों से नष्ट करते हैं। कषाय में जीने से या कषाय करने से कोई भी मोक्ष में नहीं गया। हमें ऐसी शक्ति (आत्म शक्ति) जुटानी चाहिये कि, जिससे हम अपने कषाय धीरे धीरे कम कर सकें, घटा सकें। कितने ही लोगों को अपने नकारात्मक नजरिये से ऐसा कहते सुना है कि, गुस्सेवाला स्वभाव (क्रोधित स्वभाव) कभी बदलता नहीं है। इस वाक्य के समर्थन में ये कहावत प्रचलित है कि, ‘पडी पटाले भात, फाटे पण फिटे नहीं’ परंतु प्रयत्न करने से सब संभव हो सकता है। कहते हैं ना - **Everything is possible if men apply mind.** इसलिये कोई भी धर्म-क्रिया कषाय से

8

मुक्त होकर ही करनी चाहिये। इसलिये अठारह (18) पाप स्थानक में भी छः स्थान कषाय त्याग के बताये हैं।

कषाय के त्याग से प्रत्येक जीव में मैत्रीभाव का संचार होता है। इसलिये पूज्यपाद ‘हरिभद्र सूरीश्वरजी’ म.सा. ने ऐसा बताया है कि, कोई भी धर्मानुष्ठान मैत्रीभाव पूर्वक होना चाहिये और यही जैन धर्म का एक अनन्य मोक्षमार्ग है। सद्गुणों की अनुमोदना इसी से प्राप्त होती है। कषाय प्रमाद है, रागद्वेष प्रमाद है और मैत्रीभाव अप्रमाद है।

**मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि नियोजयेत् ।
धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्वि तस्य रसायनम् ॥**

- योगशास्त्र ४/११७

धर्मध्यान को बार-बार करने मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भावनाएँ करनी चाहिये। क्योंकि धर्मध्यान ही उन भावनाओं को जोड़ने के लिए एक मात्र रसायन है। ऐसा कलिकाल सर्वज्ञ

9

‘हेमचंद्राचार्यजी म.सा.’ ने योगशास्त्र में बताया है।

उपयोग विषयक चर्चा के अंतर्गत ‘श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरि’ म.सा., ‘श्री जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण’ और ‘श्री मल्लवादी सूरि म.सा.’ के भिन्न भिन्न मत हैं, फिर भी, शास्त्रों में कहीं भी कोई भी पूर्वाचार्यों ने ये तीनों ही मान्यता में से कोई भी मान्यता को मिथ्या नहीं कहा और ना ही इसका प्रवर्तन करनेवालों को मिथ्यात्वी कहा है। पूज्यश्री ‘हरिभद्रसूरीश्वरजी म.सा.’ ने इन तीनों मान्यताओं का समन्वय किया है और ये बतलाया है कि, नयों की विवक्षा से तीनों ही मंतव्य सच्चे हैं, सही हैं। तो आज बात-बात में हम किसे भी कैसे मिथ्यात्वी कह सकते हैं ? और अगर हम इन मान्यताओं को नहीं माने तो हमारी कोई भी धर्मक्रिया कैसे धार्मिक कहला सकती है ?

कषायों के रहते यदि कोई धर्मक्रिया करे तो

10

क्या धर्म है ? मैत्रीभाव के न होते हुए और प्रमोदभाव के न रहते हुए कोई धर्म हो सकता है ?

क्रोध की हार

अरे ! आधुनिक व्यक्तित्व विकास के इस युग में भी ये (बात) समझाने में आती है कि, कषाय करनेवाले कभी भी सफल उद्योगपति नहीं बन सकते और ना ही उसके समानकक्षा (समकक्ष) के स्थान पर शोभा देते हैं। इसलिए कहा गया है कि, ‘ये समझ के चलिये कि जो तुम्हें गुस्सा दिला सकता है वो तुम्हें हराकर जीत भी सकता है।’ मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से मनुष्य की विचारक शक्ति के कारण ही उसकी दुर्लभता बताई गई है। **दशवैकालीक सूत्र** के अंतर्गत यह बताया है कि,

**‘उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे ।
मायं च ज्जव भावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥’**

क्रोध, मान, माया और लोभ को क्षमा, नम्रता, सरलता और संतोष से जीतना चाहिये। और

11

दशवैकालीक सूत्र में ये भी बतलाया है कि, ‘कोहो पीई पणासेई, माणो विणय नासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व-विणासणो ।।’

क्रोध से प्रेम का, मान से विनय का, माया से मित्रता का और लोभ से सर्व नाश होता है।

क्रोध एक साधन

क्रोध को भी कई लोगों ने साधन के रूप में इस्तेमाल किया है, और अपना काम साध लिया है। विश्व विख्यात Boxer महमद अली उर्फ ‘कैसियस कले’ ने स्वयं की सफलता का राज़ क्रोध को बताया है, वो इस तरह की वो अपने प्रतिस्पर्धी को पहले बहुत गालियाँ देता फिर बहुत गुस्सा दिलाता था। जिससे सामने वाला प्रतिस्पर्धी गुस्से में पागल हो जाता था। और पागल को हराना कोई बड़ी बात नहीं। पागल को जीतना आसान है।

‘Anger is a temporary madness.’

इसलिए हमें कोई भी क्षेत्र में आगे बढ़ना हो

12

तो हमें अपने दिल और दिमाग दोनों को स्थिर रखना चाहिये।

गौतम बुद्ध

एक समय की बात है, गौतम बुद्ध उपदेश दे रहे थे। वहाँ के कुछ नागरिकों ने उस समय बुद्ध को कई अपशब्द कहे, फिर भी बुद्ध पर कोई असर नहीं हुआ। तब उस गाँव के मुखिया ने उन्हें पूछा कि, लोग तुम्हें इस तरह गालियाँ दे रहे हैं, फिर भी तुम पर कुछ भी असर नहीं हुआ। तब गौतम बुद्ध ने बड़ी समता से उत्तर दिया कि, इसके पहले हम जिस गाँव में थे वहाँ के लोगों ने हमें मिठाई दी थी, वो हमने नहीं ली तो उन लोगों ने वो आपस में बाँट ली। तब मुखिया हँसते-हँसते बोला तो आपने गाँव वालों के इन अपशब्दों का स्वीकार नहीं किया इसका मतलब हम ये अपने आप में ही बाँट ले, ये ही है ना ?

ऐसे स्थितप्रज्ञ इंसान कषायों के सामने कषाय करने के बदले क्षमा आदि द्वारा नुकसान से बच जाते हैं।

13

युधिष्ठिर

एक बार युधिष्ठिर और बाकी सभी विद्यार्थियों को द्रोणाचार्यजी ने एक पाठ याद करने दिया। सभी विद्यार्थियों ने पाठ याद किया और गुरु को सुनाया, पर युधिष्ठिर नहीं सुना पाये। तब द्रोणाचार्यजी ने उन्हें दंडित किया। दंडित करते ही युधिष्ठिर ने वह पाठ गुरु को सुनाया। तब द्रोणाचार्यजी ने इसका रहस्य पूछा, तो युधिष्ठिर बोले आपने “गुस्सा नहीं करना” यह वाक्य पक्का करने दिया था, पर बिना वजह तो कोई भी गुस्सा नहीं करता। ये पाठ हमें आता है, इसका कैसे विश्वास करें ? इसलिये जैसे ही मुझे सजा हुई मैं ने गुस्से का भाव न लाते हुए पूरा पाठ मुखपाठ सुनाया।

कषाय विजय के कुछ सुझाव (Tips)

कषायों के ऊपर विजय पाने के लिए समय समय पर कैसे कषायों से बचें ? इसके लिये कुछ निम्नलिखित सुझाव दिये हैं।

14

(१) जो व्यक्ति के साथ में रहने से या जो स्थान में जाने से कषायों की उत्पत्ति होती हो ऐसे व्यक्ति व स्थान से दूर रहने का प्रयत्न करें।

(२) जब कोई व्यक्ति थका हुआ हो, हारा हुआ हो, या भूखा हो तब वह अधिकांश गुस्सा करता है। ऐसे समय में थके हुए को आराम, हारे हुए को दो मीठे शब्द और भूखे को भोजन दिया जाय, बाद में उससे बात करे तो वो व्यक्ति कषाय करने से बच जाता है। साथ में यही बात अपने ऊपर भी लागू करें। जब आप थके हुए, हारे हुए, या भूखे हो, तब किसी भी महत्त्वपूर्ण बात पर चर्चा न करें।

(३) 'गुस्सा' याने दूसरों की भूल के लिए खुद को सजा देना। कोई व्यक्ति अगर यथासमय कोई काम ना करे तो ये उसकी भूल है पर हम उस पर गुस्सा करके अपना पूरा शरीर गुस्से द्वारा नर्वस सिस्टम में डालकर और मानसिक तनाव बढ़ाकर अपने खुद के आयुष्य को, शक्ति को कम करते हैं। किस लिए ?

15

(४) आवश्यक सूत्र में तीसरा सूत्र खमासमण सूत्र आता है, इसमें भी साधू को 'क्षमाश्रमण' कहा है। वो इसलिए कि, साधू के पास सर्वश्रेष्ठ क्षमा की अपेक्षा शास्त्रकारों ने रखी है। और अन्य अपेक्षाओं को गौण बताया है। इसलिये क्षमा रखना भी बहुत जरूरी है।

(५) क्रोध करने से इंसान की पाचन शक्ति और स्मरण शक्ति दोनों का हास होता है, इसलिए भी क्रोध से बचें।

अब तक हमने सिर्फ क्रोध की बातें की है। मान, माया, लोभ ये सभी भी इतने ही भयंकर दूषण हैं।

कषायों पर जीत याने नफा

धर्मक्रिया ये तो सिर्फ व्यापार है। जिसमें कषायों की मंदा याने नफा है। धर्मक्रिया करने वाला श्रावक उत्तरोत्तर उदार, औचित्यवान और गंभीर बनकर कभी भी किसी के दोषों को नजर अंदाज कर नये वैर-दुश्मनी और बदला लेने की भावना से संपूर्णतया मुक्त हो जाता है।

16

'क्रोधो मूलमनर्थानां, क्रोधः संसारवर्धनः।
धर्मक्षयंकरः क्रोधस्तस्मात् क्रोधं विवर्जयेत्।।

- श्लोक २७९, 'सुभाषित संग्रहः'

ये दुर्लभ मानव-जीवन आत्मा को परमात्मा बनाने के लिये ही मिला है, इसलिये समय को थोड़ा भी निरर्थक न जाने दे। ऐसे उच्च और दुर्लभ मनुष्य-जीवन में कषाय करने के लिये प्राधान्य देना योग्य नहीं है।

यहाँ किसी को ये शंका होती है कि, गुस्सा पोषाता नहीं ये कैसे कहते हैं ? क्यों ? क्या ये मानव जन्म कहीं से खरीद के लाये हैं ? उसका जवाब ये है कि, कोई भी पढ़े-लिखे इंसान से लेकर सामान्य या कोई अनपढ़ से भी पूछें कि, आपके शरीर का कोई भी एक अंग चाहे आँख, कान, हाथ क्या आप काटकर दे सकते हो ? उन अंगों के बदले में आपको लाखों रुपये दिये जायेंगे तो भी जवाब आपको 'ना' में ही मिलेगा।

यहाँ पर यह बात विचार करने जैसी है कि, कोई इंसान ने अगर एक वस्तु १ रु. में खरीदी

17

हो और कोई दो रुपये में मांगे तो वह सहर्ष दे देगा। फिर यहाँ लाखों रुपये के बदले शरीर का एक अंग क्यों नहीं ? क्योंकि ये मनुष्य-जन्म अनेक भवों में अनंत कर्म भोगने के बाद प्राप्त हुआ है। ऊंट, गधा, घोड़ा, हाथी आदि के भवों में अपार मेहनत करने के बाद कभी तो भी कोई भव में देव-गुरु-धर्म की आराधना करने का सुअवसर मिला होगा। जिसके फलस्वरूप ऐसे दुर्लभ मानव-जन्म की प्राप्ति हुई। इससे मानव जन्म कितना दुर्लभ हे ये साबित होता है।

कीमती वस्तु दुर्लभ हो के नहीं हो पर निश्चित ही दुर्लभ वस्तु कीमती होती है। और इसलिए इस श्लोक में मानव-जन्म को दुर्लभ कहा है। इसलिए मानव जन्म अमूल्य है। इसे निष्कषाय, क्षमा और मैत्र्यादि भावों से सदा भावीत कर अमूल्य मनुष्य जीवन का मूल्यांकन करना चाहिये।

इसलोक में कषाय से नुकसान

इसलोक में क्रोध की वजह से दुष्परिणाम

18

देखने और सुनने में आते हैं। इस क्रोध की वजह से कई कटु परिणाम आत्मा को भोगने पड़ते हैं उसका एक दृष्टांत है। हाल ही में मुंबई में घटित यह घटना है। एक चॉल में रहनेवाली बहन पानी की लाईन में रखी बाल्टी मकान मालकिन के हटा देने से इतनी क्रोधित हुई कि, सीधे अपने कमरे में जाकर खुद को आग के हवाले कर दिया। इतना ही नहीं जलते जलते वह मकान मालकिन से जा लिपटी। क्रोध के आवेश में आकर उसने अपना और उस मकान मालकिन दोनों का ही अमूल्य मानव-जीवन नष्ट कर दिया।

क्षमा-स्वभाव

क्षमा ये आत्मा का स्वभाव है। कोई भी इंसान पुरे दिन गुस्सा नहीं कर सकता, क्योंकि इससे शरीर पर विपरीत परिणाम होता है। लेकिन वही क्षमा-भाव अगर हम निरंतर रखे तो भी इसका कोई विपरीत परिणाम नहीं होता। जैसे बाहर जाने के बाद हम वापिस घर लौटते

19

हैं तब हम ये कभी नहीं कहते हैं कि, कितनी बार घर जाये ? क्योंकि जितनी बार आप बाहर जाओगे उतनी ही बार घर वापस आना ही होगा। ऐसे ही कोई चाहे बार-बार हम पर गुस्सा करे तो भी हमे ये नहीं सोचना चाहिये कि, उसे कितनी बार क्षमा करे ? क्योंकि क्षमा ये अपना स्वयं का घर है और गुस्सा परायों का घर है।

जैन दर्शन में कषायों से मुक्ति

अपने दैनिक दिनचर्या में क्षमा को अपना अंग बना लेना चाहिए। क्योंकि हम जो अभी क्षमा भाव रखते हैं वो सेकंड क्लास की है। जब क्षमा यह हमारा स्वभावरूप अंग बन जाये तब सच्चा आनंद हम पा सकते हैं। इसके लिये हमें बहुत परिश्रम की जरूरत है।

पार्श्वनाथ भगवान के द्वारा कमठ के ऊपर रखी क्षमा और भगवान महावीर ने चंडकौशीक के ऊपर रखी क्षमा - ये उच्च और श्रेष्ठ कक्षा (प्रकार) की क्षमा है। जब तक ऐसी क्षमा हम में नहीं आती तब तक उनके आलम्बन और

20

आदेश की स्वभावगत क्षमा लाने का हमें प्रयत्न करना चाहिए। जिसके लिए गजसुकुमाल, मेलारज मुनि और खंधक मुनि आदि ऐसे सैंकड़ों, हजारों उदाहरण शास्त्रों के पन्नों में लिखे मिलेंगे। या एसा कहे कि, 'जैन दर्शन याने क्षमा का दर्शन।'

विश्व के कोई भी धर्म में क्षमापन पर्व (संवत्सरी पर्व) देखने नहीं मिलेगा। ये पर्व जैन दर्शन का समस्त विश्व को एक अमूल्य उपहार है। इसलिए हमारा ये कर्तव्य बनता है कि, ऐसे पर्व का हम हर साल उत्सव मनाएँ। सिद्धशिला पर बिराजमान मोक्ष तो हम सबको पाना ही है। परंतु तब तक उसके आस्वाद चखने हो, तो कषाय का त्याग करने से ही अनुभव कर सकेंगे।

कषायों का त्याग कर हम इसे अनुभव कर सकते हैं। ये बात दशपूर्वधर पूज्य 'उमास्वातीजी म.' ने 'प्रशमरति' ग्रंथ में बताई है। 'कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।'

क्षमा करने से मनोबल बढ़ता है और साथ

21

में सहन-शक्ति में भी वृद्धि होती है। क्षमाशील के सामने क्रोधी आत्मा कमजोर पड़ जाती है। तब उसकी तर्कशक्ति क्षीण हो जाती है, और कमजोर ज्यादा गुस्सा करता है। कहावत भी है, 'कमजोर को गुस्सा बहुत।'

बुद्धिमान इंसान न्यायाधीश की तरह हो तो सत्य के कई तरीके जान सकता है। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा यह वीरों का आभूषण है। सच्चा वीर तो वो है जो कषायों की भट्टी में तपकर जैसे स्वर्ण-सा बाहर आता है। उससे उसकी चमक और बढ़ जाती है। क्षमावीर पुरुष तो हमेशा ऐसा मानते आये हैं कि, हमें कषाय विजयी बनाने में ये आत्माओं के अनंत उपकार हैं, जो निमित्त बनकर हमें क्षमावान बनने का मौका देते हैं। हमारी आत्मा जो कषायों से विशुद्ध हो गई उसे आत्मा का विकास कर मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ने को प्रेरित करती है।

ऐसे जीवन में, कषायों के त्याग से आध्यात्मिक विकास और स्वभाविक क्षमा आदि सिद्धि द्वारा

22

मोक्ष की प्राप्ति करने में उपयोगी प्राप्त हुआ मनुष्यभव सार्थक होता है।

स्तनपान से मृत्यु

एक स्त्री ने अपने नन्हे बालक को अतिशय क्रोध, कषाय के आवेश में आकर स्तनपान कराया और उस बालक की तुरंत ही मौत हो गई। कारण अतिशय कषाय की वजह से दुध का विष में परिवर्तन हो गया। सोचिए, गुस्सा(कषाय) रूपी जहर आत्मा की परलोक में दुर्गति कराता है और इहलोक में मृत्यु देता है। शास्त्रों में भी ये बात आती है कि, 'क्रोधे क्रोड पूर्व तणुं, संयम फल जाय' अर्थात् करोड़ पूर्व का (यानि लाखों-करोड़ों वर्षों से भी कई बड़ी संख्या) पाला हुआ संयम (चारित्र) का फल क्रोध करने से नष्ट हो जाता है।

पारलौकिक नुकसान

क्रोध कषाय की वजह से घोर तपस्वी, मुनि भी चंडकौशीक बने। ऐसे कषायों को जो क्षमारूपी औषध से शांत न किया जाय तो धीरे धीरे आगे

23

के भवों में इसका दायरा बढ़ता जायेगा।

घर-स्वर्ग

कौटुंबिक जीवन में सहन-शीलता रखने से घर को स्वर्ग बनाया जा सकता है। सभी दोषों का सम्राट, अधिपति 'अहंकार' है। जो हमें स्वदोष दर्शन और परगुण दर्शन करने से रोकता है। जीवन में व्याप्त सुषुप्त अहंकार भी भविष्य में क्रोध का विकराल रूप धारण करता है। Psychologically देखा जाय तो संतानों को माता-पिता से और शिष्यों को गुरुओं का भरपूर वात्सल्य मिलता है तब उनमें दुःख सहन करने की शक्ति बढ़ती है, जिस कारण सामने से आ रही कषायों की ज्वाला को क्षमा की बरसात से शांत कर सकते हैं।

स्वदोष दर्शन और पर दुःख दर्शन

जिनकी दृष्टि आत्मा से परमात्मा की तरफ, देह से आत्मा की तरफ और आलोक से परलोक की तरफ जाती है-उन्हें कषायों को सहन करना

24

सरल होता है। उनके लिये इसमें कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि वो पूछते हैं कि, "जो मारे दुःखों जोवा होय तो मात्र पारकाना अने दोषो जोवा होय तो फक्त स्वना।" अर्थात् अगर मुझे दुःख देखना हो तो दूसरों के देखूं और दोष देखना हो तो स्वयं के देखूं। ऐसा जब हम मानने लगे तब आत्मा की उड़ान सम्यक् दिशा की तरफ हो जाती है और मनुष्य जन्म सार्थक हो जाता है।

मरे हुए को जलाए वो श्मशान।
जीवितों को जो जलाए वो कषाय।।

परंतु महापुरुषों के कषाय भी स्व-पर के लाभ के हेतु हैं। महापुरुष कषायों के गुलाम नहीं होते थे, बल्कि कषायों को अपना गुलाम बनाया था। तब महापुरुषों को कषायों को लाना पड़ता था। हमारे जैसे क्षण-क्षण में उन्हें कषाय नहीं आता था। और कार्य पूरा होने पर कषाय नाम मात्र भी शेष नहीं रहता था। इस बात पर 'विष्णुकुमार मुनि' का दृष्टांत प्रसिद्ध है। चोर

25

को पकड़ने के लिये पुलिस की जरूरत होती है। पर जब चोर खुद ही भाग जाये तो पुलिस भी चली जाती है। ऐसे ही जब तक अप्रशस्त कषाय नहीं जाते तब तक प्रशस्त कषाय भी आत्मा के उत्थान के लिये जरूरी हैं। और जब ये अप्रशस्त कषाय निकल जायेंगे तब प्रशस्त कषाय स्वयं ही चले जायेंगे।

गौतम स्वामी का विनय

इस प्रस्ताव में चरमतीर्थपति प्रभु महावीर परमात्मा के परम विनयी और अनंत लब्धि के निधान ऐसे प्रथम गणधर गौतम स्वामी का दृष्टांत सिद्ध है कि, प्रभु के प्रति राग के कारण जग के सभी पदार्थों के ऊपर रखा राग निकल गया और समय रहते वीर प्रभु के निर्वाण को निमित्त बनाकर अपना पूरा राग त्यागकर संपूर्ण निष्कषायी बने। ऐसे कषाय रूपी जहर को मोह का जहर उतारने के लिये प्रभु का नाम स्मरण, विनय और प्रभु की आज्ञा का पालन यही श्रेष्ठ दवा है।

26

हे प्रभु ! हम कब ऐसे निष्कषायी बने ? जैसे कि, एक व्यक्ति से किसी ने कहा भाई जरा धीरे बोलो, दूसरों को तकलीफ (Disturb) होती है। तब वह व्यक्ति बोला मेरा आवाज ही बड़ा है तो मैं क्या करू ? पर जब उसका कोई दुर्गुण, दोष या कोई भूल ढंकने का अवसर आया तो उसका आवाज एकदम धीमा हो गया। जैसे साक्षात् नम्रता उसके मुख में बसी हो। ऐसे खुद के स्वार्थ से, मनुष्य का नम्र होना, स्वभावजन्य नम्रता नहीं है। ऐसी नम्रता का कोई मूल्य नहीं। क्योंकि आत्मिक उत्थान के लिये निःस्वार्थ भाव की नम्रता, क्षमा, सरलता और संतोष की ही कीमत होती है। जो स्वाभाविक है।

क्रोध के पोषक तत्त्व

कई बार क्रोध जिस तरह मानजन्य होता है, उसी तरह मायाजन्य और लोभजन्य भी होता है। जैसा कि, जब किसी की मान की अपेक्षा परिपूर्ण न हो तो वह क्रोध के रूप में बाहर आती है, पर इस क्रोध के पर्दे के पीछे

27

मान रहता है। कई बार हम अपनी बातों को छुपाने को या बतलाने हेतु भी गुस्से का सहारा लेते हैं। ये मायाजन्य क्रोध है। कितनी ही बार व्यापारी कम कीमत में माल नहीं बेचना चाहता और ग्राहक के साथ झगड़ा करता है, गुस्सा करता है। ये लोभजन्य क्रोध है। ये सभी कषाय हम में किस कारण उद्भव हुये उसका पृथक्करण करना हमें आना चाहिये।

बलदेवभाई डोसाभाई पटेल

अहमदाबाद में एक पटेल भाई रहते थे। जो जैन ना होते हुए भी जैन-धर्म का पालन करते थे। उनके एक रिश्तेदार थे, जिनके नाम का उल्लेख यहां नहीं किया गया। ये बड़े ही कषायी थे, क्रोधी थे। इन्हें पैसों का भी बहुत घमंड था। अपने इस अहंकार की वजह से वे अपने परलोक में क्या होगा ये विचार भी नहीं कर पाते थे। योगानुयोग, एकबार व्यापार में उन्हें बहुत बड़ा नुकसान हुआ। तब पटेल भाई बड़े उदार भाव से अपना करोड़ रूपया लगाकर

28

उनका नुकसान भरपाई कर आर्थिक मदद की। पटेल भाई को इस बात का इतना संतोष हुआ कि, भले ही मेरा करोड़ रूपया गया पर अब तो इसका मान, कषाय, क्रोध शांत तो हुआ। ये जो हमेशा अद्धर चलता था वो लाईन पर तो आया। ऐसे दूसरों को कषायों से बचाने के लिये इतना धन व्यय करनेवाले पुण्यात्मा इस धरती पर विद्यमान है। धन्य है।

क्षमा के प्रकार

हमें सिर्फ क्रोध के सामने ही क्षमा करना ऐसा नहीं है। बल्कि, यदि किसी को बहुमान की इच्छा हो और इस बात की हमें जानकारी हो तो उसे मान दिलाना भी एक मान के समकक्ष क्षमा है। इसी तरह माया और लोभ के सामने भी क्षमा भाव रखें। व्यक्ति में कषाय क्यों उत्पन्न हुआ और वह कितने प्रमाण में है, इसका पृथक्करण करना जब आ जाये तो हम उनके सामने रक्षा प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। जिसमें हमें पूरी सफलता मिलती है।

29

परदुःख में सुखी

एक समय की बात है। एक संन्यासी अपने संन्यास के २५-३० साल बाद भी जब-जब अपने इष्टदेव के पास जाते एक ही प्रार्थना करते थे कि, हे देव ! मेरे पहले दोष को माफ करना। यह सुनकर उनके साथ के शिष्य को बड़ा आश्चर्य होता था। कई बार अपने गुरु से पूछना भी चाहता था पर बोल नहीं पाता था। आखिरकार एक दिन उसने हिम्मतकर पूछा आप रोज ये इष्टदेव से कैसी प्रार्थना करते हो ? क्या राज़ है ? किस पहले दोष की आप माफी मांगते हो ? तब संन्यासी एकदम स्तब्ध हो गये और पश्चात्ताप के स्वर में कहा कि, संन्यास लेने के पहले की यह घटना है, मैं अपने घर खाना खा रहा था। उतने में समाचार आया कि, मार्केट में आपकी दुकान को आग लगी है। मैं वैसे ही खाना छोड़कर भागा, जाकर देखा तो जिस दुकान में आग लगी थी वो मेरी नहीं बल्कि बाजुवाले की थी। मेरी दुकान को कुछ नहीं

30

हुआ, ये देख मुझे उस समय जो आनंद, संतोष हुआ था। उस दोष की माफी मैं रोज प्रभु के पास माँगता हूँ। ये दृष्टान्त हमें ये विचार करने पर मजबूर करता है कि, अपने दुःख से दुःखी होना स्वाभाविक है, पर दूसरों के दुःख को देख सुखी होना यह कैसे ? तो बताईये दुर्लभ मनुष्य-जन्म की सार्थकता कैसे होगी ?

चार प्रकार के मनुष्य

इस दुनिया में चार प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं।

(१) श्रेष्ठ आत्मा जो अपना बिगाड़कर दूसरों का भला करते हैं।

(२) विमध्यम आत्मा जो अपना और दूसरों का दोनों का सुधारे, सबका भला करें।

(३) मध्यम आत्मा वो जो खुद का न बिगाड़े, तो दूसरों का भला करें।

(४) अधम आत्मा जो खुद का १ रूपया बचाने के लिये दूसरों का १०० रूपया बिगाड़े। हम पूर्णरूप से कषायों से दूर न भी हुये तो

31

कम से कम तीसरे और चौथे प्रकार की श्रेणी में तो न आये तभी दुर्लभ मानव जीवन सार्थक गिना जायेगा।

महाकवि भारवि

एक युवक को काव्य-कविता बनाने का बहुत शौक था। उसके काव्य लोगों में बहुत प्रसिद्ध थे। उसकी प्रसिद्धि चारों तरफ फैलने लगी। राज दरबार से भी उस युवक को कविता सुनाने का आमंत्रण आया। उसकी कविताएँ सुन राजा ने प्रसन्न होकर उसे बहुत सारी भेंट-सौगात देकर बहुमान किया। जब उस युवक के माता-पिता को इस बात का पता चला तो उन्होंने भी पुत्र से कविताएँ सुनाने को कहा। मातृभक्त पुत्र ने भी बड़े भाव से स्वयंरचित कई काव्य रचनाएँ उन्हें सुनाई। माता, पुत्र की इस काव्यशक्ति से हर्षविभोर हो गई और अति प्रसन्न होकर बहुत आशीर्वाद दिये। भविष्य में तुम बहुत बड़े कवि बनोगे ऐसा कहकर प्रशंसा की। परंतु उस युवक के पिताजी मौन रहे। इस बात का युवक

32

को बहुत दुःख हुआ। उसे बड़ा खराब लगा और वो रूठकर घर छोड़ के चला गया।

दो-तीन दिन बाद जब वो घर की तरफ लौट रहा था, उस समय उसके माता-पिता कोई बात पर चर्चा कर रहे थे। आवाज सुनकर पुत्र छिपकर माता-पिता की बात कान देकर सुनने लगा। उस समय पुत्र की काव्य-शक्ति से अतिप्रसन्न हुए उसके पिताजी माता के सामने प्रशंसा कर रहे थे। तब माता ने कहा यही प्रशंसा के बोल यदि आप पुत्र के सामने करते तो वो रूठकर घर छोड़ के न जाता। तब पिताजी ने अपनी अंदर की भावना कही।

राज्यप्रशंसा और लोकप्रवाह में आकर पुत्र में कहीं अहंकार न आ जाये, क्योंकि अहंकार इंसान का इसलोक और परलोक दोनों को बिगाड़ देता है। अहंकार से पुत्र को दूर रखने के लिये मैं मौन रहा। नहीं तो तुम ही कहो भला अपने पुत्र की प्रशंसा लोगों के मुख से सुन किस पिता को दुःख होता ? इससे तो खुशी ही

33

मिलती है।

यह बात जब पुत्र ने सुनी तो उसकी आँखों से आँसु बहने लगे और तुरंत दौड़कर पिता के चरणों में आ गिरा और क्षमा मांगने लगा। ये कवि और कोई नहीं भारत के श्रेष्ठ कविराज कालीदास के बाद हुए महाकवि 'भारवि' है।

ऐसे पूज्य माता-पिता और उपकारी गुरुजन हमें कषायों को काबू में रखने के लिये सहायक, मार्गदर्शक बनते हैं। गुरुकृपा बिना ऐसे विकराल कषायों को रोकने की ताकत किसी में भी नहीं है।

प.पू. लब्धिसूरीश्वरजी म.सा.

अनंत लब्धि के स्वामी, गौतम स्वामी जैसे चौदह विद्या के धनी भी एक बार अहंकार में आ गये पर जब उनके ऊपर वीर प्रभु की असीम कृपा हुई तब वे हंमेशा के लिए विनयी, नम्र बनकर प्रभु के चरणों में समर्पित हो गये। ऐसे ही हमारे दादा गुरुदेव 'पू. लब्धिसूरीश्वरजी' म.सा. (उस समय के मुनि लब्धि विजय) देर रात तक स्वाध्याय करते थे और अगर थोड़ी

34

नींद की झपकी आ जाय तो पू. 'कमलसूरीश्वरजी' म.सा. उनके सर पर मोटा डंडा मारते थे।

'पू. लब्धिसूरीश्वरजी म.सा.' ऐसा समझते थे कि, यह डंडा उन पर नहीं बल्कि उनके कषायों पर पड़ रहा है। गुरु तो तारणहार हैं, साथ ही साथ कषायों के मारणहार भी हैं। 'पू. कमलसूरीश्वरजी म.सा.' से प्राप्त इस गुरुकृपा के प्रभाव से 'पू. लब्धिसूरीश्वरजी' म.सा. पिछले ४०० वर्ष में किसी ने भी नहीं किये ऐसे चार (Debate)वाद में जोरदार विजय प्राप्त की थी। साथ में नये-नये भव्य ग्रंथों की रचना भी की थी। सुंदर काव्य-कविताएँ भी बनाई थी। अनेक प्रतिष्ठाएँ, छःरी पालित संघ निकाले। ऐसे अजोड़ व्याख्याता के होते हुए भी उनमें एक नन्हें बालक जैसी नम्रता और सरलता थी। इसका मुख्य कारण 'गुरुकृपा' ही थी। जो पूज्यश्रीजी को डंडे के प्रसाद रूप में मिली थी। ऐसे गुरु उनके कषायों के निवारणहार सिद्ध हुए।

सकल जैन संघों में विद्यमान उस समय के

35

आचार्यों में पूज्यश्रीजी का नाम सर्वोच्च था। पूज्यश्रीजी गुरुकृपा की प्रबलता से, नम्रता और सरलता से सर्वोच्च स्थान पर थे। इसलिए कहा है, 'गुरुकृपा ही केवलं शिष्यस्य परं मंगलं।'

डॉ. राधाकृष्णन

'प.पू. लब्धिसूरीश्वरजी म.सा.' द्वारा संपादित ग्रंथ का विमोचन राष्ट्रपति 'डॉ. राधाकृष्णन' ने किया तब भी पूज्यश्री आप मान कषाय से दूर ही रहे। ये शैशव काल में मिली गुरुप्रसादी से पूज्यश्री को कषायों के आवेश से और आवेश से दूर रखा।

ऐसे अनेक उदाहरण शास्त्रों में मिलते हैं। जैसे की, हरिभद्रसूरीश्वरजी म.सा. बौद्धों के साथ वाद में विजयी बनकर बौद्धों को खत्म कर देने के आवेश में आ गये तब उनको परम उपकारी गुरुणी साध्वीजी ने बचा लिया। ठीक उसी तरह विक्रमादित्य के प्रतिबोधक, 'सिद्धसेन दिवाकर सूरीश्वरजी म.सा.' जब राजा द्वारा की गयी प्रशंसा से खुद के गौरव में पड़े, अहंकार

36

से खींचते चले गये तब उनके गुरुदेव 'वृद्धवादि सूरीश्वरजी म.सा.' ने उन्हें प्रतिबोधित किया।

इसी तरह मेरे जैसा कषाय विजेता, क्रोधविजयी दूसरा कोई नहीं, मैं तो बिल्कुल निरहंकारी हूँ। मुझे कभी गुस्सा आता ही नहीं है। ऐसा मिथ्याभिमान रखना नहीं और ऐसा कहना ही सबसे बड़ा अहंकार है।

जगदिव्यात शिल्पज्ञ

एक महान शिल्पी थे। उनका पुत्र भी बड़ा शिल्पज्ञ था। पर पुत्र की अच्छी से अच्छी बनाई शिल्पकला में भी उसके पिताजी कोई ना कोई मीन-मेख निकालते थे। कहीं ना कहीं कोई गलतियाँ बताते थे। सभी उसके शिल्प की खूब प्रशंसा करते थे, पर पिताजी हंमेशा गलतियाँ ही निकालते। पिता से प्रशंसा पाने के लिये उसने एक उपाय निकाला। एक सुंदर प्रतिमा बनाई और उसके पिता के मित्र को दी। साथ में ये भी कहा कि, जब मेरे पिताजी आपसे मिलने आये तब आप उन्हें ये प्रतिमा

37

प्रकाशक के दो शब्द

अनादि काल से यह जीव कषायों की संज्ञा में रमण कर रहा है। इसको राग-द्वेष के साथ आंख-मिचौली (चोर-पुलिस) का खेल खेलने में मज़ा आ रहा है। आत्मा का ज्ञान-गुण विस्मृत ही हो गया है - ऐसा लगता है। किसीने अपने पर गुस्सा किया और पश्चात् एक घंटे के लिये व्याख्यान सुना। अभी कोई पूछे कि व्याख्यान में सुना हुआ याद है? तो अपना प्रत्युत्तर न्यानवे प्रतिशत "ना" में ही होगा। किंतु व्याख्यान के पूर्व अपने पर हुआ गुस्सा अपने को बराबर याद रहता है। आत्मा का मूलभूत गुण ज्ञान होने पर भी कषाय-संज्ञा के कारण ज्ञानगुण प्रगट नहीं होता है।

यह तथ्य हम मानें या न मानें, किंतु शत प्रतिशत सही है और हम सब पर लागू होता है। इसलिये कषाय-संज्ञा में से अपनी आत्मा को ज्ञान संज्ञा में ला कर स्थिर रखना। एक चिंतनात्मक प्रस्तुति के रूप में प्रकाशित यह पुस्तक हम सब को निश्चित रूप से फायदेमंद होगा। आवेग और

2

आवेश में आ रहा क्रोध के प्रतिरोध में यह एक सुंदर चिंतनपूर्ण प्रयास है।

पूज्य आचार्य श्री राजयश सूरेश्वरजी म. सा. के प्रवचनों को संकलन करके प. पू. गणिवर्य श्री विश्रुतयशविजयजी म. सा. ने 'क्रोधविजय' नाम की गुजराती पुस्तिका का श्रीमती मंजुबेन बार्शीवाले द्वारा हिंदी अनुवाद कराके श्री उमरावमलजी भंडारी हस्तक भंडारी सूरजमलजी परिवार, सिकन्द्राबाद के सौजन्य से प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित कराके हिंदीभाषीओं को लाभान्वित और हमें गौरवान्वित किया है।

- राजेन्द्रभाई दलाल, सिकन्द्राबाद
श्री लब्धि विक्रम सूरेश्वरजी संस्कृति केन्द्र
T/7-A, शांतिनगर, विक्रम सूरेश्वरजी मार्ग,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-380 013 (Guj.)
सेतुभाई एस. शाह
C/o. एल.वी.ए. ह्यूमेनीटेरीयन चेरीटेबल ट्रस्ट
11, ओपेरा सोसायटी नं.1, पालडी,
अहमदाबाद-380 007 Phone : 94265 12345

3

अनुक्रमणिका

१. क्रोध की हार	११
२. क्रोध एक साधन	१२
३. गौतम बुद्ध	१३
४. युधिष्ठिर	१४
५. कषाय विजय के कुछ सुझाव (Tips)	१४
६. कषायों पर जीत याने नफा	१६
७. इसलोक में कषाय से नुकसान	१८
८. क्षमा-स्वभाव	१९
९. जैन दर्शन में कषायों से मुक्ति	२०
१०. स्तनपान से मृत्यु	२३
११. पारलौकिक नुकसान	२३
१२. घर-स्वर्ग	२४
१३. स्वदोष दर्शन और पर दुःख दर्शन	२४
१४. गौतम स्वामी का विनय	२६

4

१५. क्रोध के पोषक तत्व	२७
१६. बळदेवभाई डोसाभाई पटेल	२८
१७. क्षमा के प्रकार	२९
१८. परदुःख में सुखी	३०
१९. चार प्रकार के मनुष्य	३१
२०. महाकवि भारवि	३२
२१. प.पू. लब्धिसूरेश्वरजी म.सा.	३४
२२. डॉ. राधाकृष्णन्	३६
२३. जगविख्यात शिल्पज्ञ	३७
२४. स्याद्वाद	४०
२५. पंच परमेष्ठी	४१

चउमुखजी प्रतिष्ठा निमिते
Shri Kulpakji Teerth

5